मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन

मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका

मूल्यों के विकास में घर एवं परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवार ही बालक में जैविक सामाजिक, आर्थिक, चारित्रिक, नैतिक सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों का संचार सर्व प्रथम करता है। परिवार में ही बालक के व्यक्तित्व की नींव पड़ती है। **जोसेफ रुसेक** ने स्पष्ट कहा है कि- "Family may be conceived as the cradle of social trait of personality". अतएव मूल्य विकास में परिवार सबसे सशक्त अभिकरण एवं साधन है। हमारे भारतीय सद्साहित्यों से परिवार द्वारा बालकों को संस्कारित बनाने हेतु आग्रह किया गया है।

यजुर्वेद में वर्णित है कि-

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।। 19/39।।

अर्थात् प्रत्येक सद्गृहस्थ का अपने पुत्र और पुत्रियों को ब्रह्मचर्य, सदाचार व विद्या के द्वारा विद्वान, विदुषी, सुन्दर और शीलयुक्त (मूल्यवादी) बनाना पुनीत कर्त्तव्य है। अतएव स्पष्ट है कि परिवार को दुर्गुणों, दुव्यसनों, दुष्चरित्रों से बचाने के लिए सुख-शान्ति और प्रगति की चेतनात्मक सम्पदा की प्राप्ति करने हेतु पाल्यों को मूल्य शिक्षा देना आज के युग में बहुत हत्वपूर्ण है। बच्चों के मानसिक, चारित्रिक एवं नैतिक विचार का मुख्याधार माता-पिता की मनोभूमि, संस्कार, आदत और घर का वातावरण ही होतां है। इसलिए जहां तक सम्भव हो सके परिवार का माहौल और कार्य-व्यवहार, सामंजस्यपूर्ण मित्रता, प्रेम, सदाचार, वात्सल्य से परिपूरित होना चाहिए। परिवार का सहयोग और संस्कार मिलने पर ही बालक मूल्य सम्पोषक मंतव्यों से संपृक्त होते हैं।

परिवार निम्नलिखित कृत्यों द्वारा बालकों को मूल्यवादी बनाने में सहायक भूमिका अदा कर सकता है-

(i) परिवार के सदस्यों को दूषित प्रवृत्तियों से दूर रहना चाहिए और बालक-बालिकाओं को सही मार्ग एवं दिशा पर चलने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(ii) परिवार के सदस्यों को अपने भाव, विचार, व्यवहार उत्तम एवं परिष्कृत रखना चाहिए।

(iii) वृद्धों का आदर, अतिथियों का सत्कार, छोटों से स्नेह का व्यवहार खना चाहिए। इससे बच्चों में भी नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का उदय होना।

(iv) बालकों के साथ शालीनता, मृदुभाषिता, स्नेह का व्यवहार कर ह चाहिए उन्हें डराकर, धमाकर मारकर नियंत्रित नहीं करना चाहिए।

(v) अभिभावकों को स्वच्छता का प्रेमी होना चाहिए, इससे बालकों में भी स्वच्छ रहने की प्रवृत्ति एवं सफाई जैसे मूल्य अभ्युदित होंगे।

(vi) अभिभावकों को दूसरे के कार्य में सहयोग देना चाहिए। इससे बालकों में भी सहयोगात्मक मूल्यों का विकास होगा।

(vii) अनावश्यक रूप से किसी व्यक्ति को अथवा जीव क. पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए। इससे बालकों में परोपकार एवं दीन-दुःखियों की सेवा की भावना संचरित होगी।

(vii) अभिभावकों को परम्परागत मूल्यों पर ही आधारित नहीं रहना चाहिए बल्कि आधुनिक मूल्यों, संवैधानिक मूल्यों से अलंकृत होना चाहिए इससे बालक भी परम्परागत एवं आधुनिक मूल्यों में समन्वय स्थापित करते हुए अपना विकास करने में समर्थ होंगे।

(ix) अभिभावकों को विभिन्न मूल्यों पर घर के सदस्यों के साथ बैठकर चर्चा, विचार विमर्श करना चाहिए, उससे बच्चों में भी मूल्यों के प्रति चिन्तन एवं विश्लेषण करने की शक्ति का **प्रार्दुभाव होगा।**

(x) अभिभावकों के कार्य, व्यवहार, आचरण एवं कथनी, करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। उनको हमेशा मूल्यवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इससे अनेक पाल्यों में भी मूल्य- सम्पोषक सुदृढ़ आधार विनिर्मित होगा।

शिक्षाशस्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष

- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम

- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन

sarkariguider.com